1–सोमवार– समय चक्र की भाँति अनवरत गतिशील है जो हमारे जीवन को भी वर्षों की परिधि में लपेटता जाता है जिससे कई बार हम समय को प्राप्तियों के बजाए बिताए दिनों के रूप में याद करते हैं। कुछ ऐसा करिश्मा हाथ लग जाये, जो हर दिन जीवन को नयी स्फूर्ति देते कि जिन्दगी ऋतुराज की बहार बन जाये, सप्ताह का पहला दिन ...सोमवार...हजारों वर्षों से यह दिन शिव का दिन माना गया शिव को शम्भू माना गया है जिसका भावार्थ है स्वयं पैदा होने वाला जिसको जिसे सृष्टि का रचयिता भी कहा गया है, और उससे प्राप्तियाँ करने के लिए हर व्यक्ति ने अपने हिसाब से योजनाओं को अंगीकृत किया, पर अब शिव स्वयं धरा पर आ चुके हैं और स्वयं अपना वास्तविक परिचय दे अखुट प्राप्तियाँ भी करा रहे हैं, तो क्यों न हम भी इस सुअवसर का लाभ उठायें। शिव को अभी तक शिवलिंग के रूप में याद कर अपने मनो भावों की अभिव्यक्ति करते आये जो उस जड़ लिंग से कोई संबंध की फीलिंग तो नहीं कराती, जिससे उसके बच्चे बनकर विरासत के अधिकारी बनने का भाग्य प्राप्त करते, और हमेशा उसे सागर कहते रहे और हम एक बूँद माँगते रहे, पर गाते हमेशा यही रहे कि तुम मात–पिता हम बालक तेरे, तो जरा सोचो सही... वो प्यार का सागर और हम एक बूँद के प्यासे रहे, प्रिय आत्मन अभी वो शिव धरती पर आ चुका है, उससे माँगने की आवश्यकता ही नहीं, वह हमारा पारलौकिक पिता है उससे मिलकर अपना जन्म सिद्ध अधिकार ले लो ।

2–मंगलवार– महावीर का नाम जब सुनते हैं तो अपन जीवन भी मंगलमय बनाने के लिए अद्भुत बलशाली हनुमान की पूजा करने लगते हैं,भगवान अभी स्वयं आकर अनेक जन्मों को मंगलमय बनाने का अति सहज ही

तरीका बता रहे हैं, तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो.....हम उसकी संतान कैसे हैं ? हम सबके माँ – बाप तो अलग– अलग और बिल्कुल हमारे जैसे ही हैं और हमारे साथ ही घर में ही रहते हैं,पर हम जिस भी देवी–देवता की प्रतिमा के सामने जाते हैं तो सभी के आगे यही गाते आये हैं तो भगवान (मात–पिता) तो अलग–2 हैं पर हम तो सभी एक जैसे ही मनुष्य का शरीर धारण किये हैं जरा सोचो.... परमात्मा कौन ? और हम कौन? शरीर को तो प्राण निकलने के बाद मिट्टी कहते हैं और झूठी काया कहते हैं, तो उस सत्य की सन्तान कौन? मैं एक चेतन सत्ता इस शरीर की मालिक जो ही शान्ति –प्रेम –ज्ञान – शक्ति की इच्छा करती है क्योंकि ये उसके मूल गुण हैं जो आज विकृत हो चुके हैं, हम इन्हें व्यक्तियों में पदार्थों में वर्षों से खोजते रहे ये क्षणिक मिले भी पर गवाँया ज्यादा, जरा ध्यान दें..... हम अपने को शरीर समझकर इसको ही सजाते रहे और अभी भी इसको ही सत्य मान कर सवाँरते रहे और स्वयं चेतना को गरीब व कमजोर बनाते गये, मंगल करने के लिए स्वयं के सत्य स्वरूप को जान–पहचान जाग्रत हो सदा के लिए अपने अनेक जन्म मंगलमय कर लें।

3–बुधवार– बुधवार को सभी लोग जगदम्बा का दिन मानते आये हैं इससे मन शुद्ध हो, जीवन शुद्ध हो जायेगा ऐसी मान्यता है पर जरा सोचो सारे जगत की माँ कोई कैसे हो सकती है, जगदम्बा सरस्वती भी कहते हैं जिसे वीणा बजाने वाली विद्या की देवी कहते हैं,पर वीणा वादिनी तो सिर्फ संगीत की देवी हो सकती है, जो संगीत विद्यालय की वन्दनीय होना चाहिए था पर ये तो विद्या की देवी हैं, जो शब्द हमारी वाणी से निकलते हैं वो जगदम्बा सरस्वती के वरदान प्राप्त होने चाहिए, क्योंकि वो हमारी माँ है, माँ की वाणी

वीणा की तरह सबको मधुर एवं मनमोहक लगती, तो सदा हमारी वाणी भी वीणा की झंकार करती रहे, इसके लिए हर मानव निर्दोष एवं उसके हर कर्म को निर्दोष भावना से मानना पड़ेगा, पर ऐसा तभी हो सकता है जब इस सृष्टि नाटक को यथार्थ समझें,समय को चार बराबर भागों में विभाजित किया है सतयुग–त्रेता–द्वापर–और कलियुग श्रीमत भगवद् गीता के अनुसार यदा यदा हि धर्मस्य.....अर्थात अब कलियुग के अन्त में भगवान स्वयं धरा पर आकर पुनः सत्ययुग की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए इस बेहद वैराइटी संसार नाटक को सहज ही समझें और अपने जीवन में सच्चा सुख एवं सच्ची शान्ति को प्राप्त करें ।

4–वृहस्पतिवार– सदियों से ये मान्यता चली आ रही है कि वृहस्पतिवार गुरू का दिन है, उस दिन स्कूल में दाखिला लेना चाहिए, पर वृहस्पति तो ग्रह है वो क्या ज्ञान दे सकता है? वो गुरू कैसे हो सकता है? या कोई और गुरू है जो वृहस्पतिवार को दाखिला लेने पर खुश होकर कौन सा ज्ञान देगें? जिसकी हमें नितान्त आवश्यकता है ही। वृहस्पति वृक्षपति का ही एक नाम है जो इस सृष्टि रूपी वृक्ष के बीज है उनसे संबंधित बात है, और इस दुनिया में भी जीवन निर्वाह के लिए शिक्षा आवश्यक है, किन्तु जीवन को सफल बनाने के लिए, हर दिन सुखी व प्रगतिशील बनाने के लिए, स्थाई शान्ति का अनुभव करने के लिए, सबसे पहले आवश्यकता है आज ज्ञान की, सदियों से कहा जाता रहा कि स्वयं को जानो या मैं की पहेली हल किया तो सब कुछ जान जायेंगें, जैसे अनाथ बच्चे अपने माँ–बाप को पाने के लिए या मनुष्य अपने पूर्वजों की तलाश में अजनबी लोगों के बीच में कितना खर्च कर यात्रायें करता है । आज मानव जो इस संसार के बच्चे हैं जो स्वयं को अपने

परमपिता को भूल कर अनाथ बन चुके हैं,ऊँचे से ऊँचे पिता परमात्मा की अनुभूति करना निःसन्देह सबसे ऊँची शिक्षा है, परमात्मा ज्ञान के सागर हैं उनको जानने से सब कुछ जान सकते हैं।

5–शुक्रवार – शक्तियों का दिन...सदियों से हम देवियों को शक्तियाँ भी कहते आये हैं, आखिर उनमें कौन सी शक्तियाँ थी, जिनकी प्राप्ति के लिए हम पूजा करते आये, जो हथियार देवियों ने धारण कर रखे हैं क्या वही हथियार धारण करना शक्ति है जो हम धारण कर लेंगें और शक्तिशाली बन जायेंगें, या वे शक्तियाँ मानसिक हैं जो मन में धारण करनी होती हैं, ये सूक्ष्म शक्तियाँ तो शक्तियों के सागर परमात्मा पिता से ही प्राप्त हो सकती हैं,जैसे पॉवरहाउस से कनेक्ट होकर बैटरी चार्ज की जा सकती है, उसी प्रकार मन को परमात्मा से कनेक्ट कर शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं, जिसे राजयोग अथवा ध्यान कहा जाता है, पर जैसे करेन्ट लेने के लिए तारों की रबड़ हटाना पड़ता है उसी प्रकार स्व की स्मृति में रहकर ही अर्थात इस विनाशी शरीर से डिटैच होकर आत्मा समझ परमात्मा पिता को यथार्थ रूप से याद कर मन की शक्तियाँ प्राप्त करें।

6–शनिवार– कई बार जब जीवन में दुख अशान्ति की भरमार हो होती जाती है तो प्रायःलोगों का यही संकल्प चलता है कि आजकल शनि की दशा है जिसमें भी हाथ लगाओ असफलता ही मिलती है, तब अधिकांस लोग भाग्य की कसौटी पर आगे के कर्म करने लग जाते हैं, जबकि कर्म भाग्य का आधार हैं, कर्म का फल भाग्य है, जो आ रहा है वो भाग्य है और जो अभी कर रहे हैं वो अभी भाग्य निर्माण कर रहे हैं, इसलिए जब चाहे अपने भाग्य

को चेंज कर सकते हैं,कई बार अच्छा करने के बाद बार–बार हार मिलती है और बुरा करने वालों के साथ सब कुछ अच्छा होते देखते तो अपने ही अच्छे कर्मों में संशय आने लगता है, इसलिए कर्म सिद्धान्त को यथार्थ जानना अति आवश्यक है, कर्म फलदायी बीज है जो फल अवश्य देगा ही, हॉ देरी भले हो जाये, पर फल आयेगा जरूर। जैसे गोभी का बीज जीवन में सिर्फ एक ही फल देता है, जबकि आम का एक ही बीज कई सालों तक कितने फल देता है, इसलिए भाग्य चाहे जैसा भी हो, पर अब श्रेष्ठ कर्म करके अब भाग्य जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं, शनिवार की ये भी विशेषता बताई जाती है कि अगर कोई कार्य शुरू हुआ तो होता ही रहेगा, तो इस दिन कर्म फिलासॉफी को यथार्थ समझ, इसी दिन श्रेष्ठ कर्म करने की शुरूवात कर लेनी चाहिए।

7– रविवार – वैसे तो ये मन को खुशी देने वाला दिन मान कर लोग शनिवार की शाम से ही रिलैक्स एवं निश्चिन्त हो जाते हैं, लेकिन रविवार ही नहीं हर दिन खुशियों का ही नहीं आनन्द का महोत्सव बन जाये, बाकी सब कार्यों से फ्री होते हैं, तो मन को सुपर पॉवर से ऐसे कनेक्ट किया जा सकता है कि जीवन की हर आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं, बल्कि पॉवरहॉउस बना जा सकता है, इसके लिए मन को पॉवरफुल एवं पॉजीटिव बनाने के लिए सिर्फ और सिर्फ एक घन्टा चार्जिंग में लगायें। रविवार अर्थात सूर्य का दिन है, तो क्यों न ज्ञान सूर्य से भी कनेक्ट हो मन को उर्जावान बनाने के साथ प्रकाशवान भी बना उसमें छिपी विकारों की कालिमा को भी हटा दें, उससे मन की तार जोड़ स्वयं को पॉवरफुल बना अन्तरमन में बैठी कमजोरियों को भी समाप्त कर लें, इससे सन्डे तो क्या जिन्दगी के 365 दिन भी जीवन

जीने का मकसद आ जायेगा, **याद रखें समय बहुत कम है,अभी नहीं तो फिर कभी नहीं।**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

1 –एक ऐसा विश्व विद्यालय जो मन के गरीबों एवं मन के बीमारों का मुफ्त इलाज करता है।

2–यह विश्व विद्यालय राष्ट्रीयता,जाति,आयु,लिंग,धर्म,सम्प्रदाय आदि का भेदभाव किये बिना सभी की सेवा।

3–नारी को संस्था की बागडोर पकड़ा उच्च सम्मान दे नैतिक एवं आध्यात्मिक अथवा मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में क्रान्ति की अग्रदूत बना नारी का सशक्तिकरण करती है।

4–एक ऐसा विश्व विद्यालय जो विभिन्न संस्कृति एवं धार्मिक पृष्ठभूमि वाले मनुष्य को एक साथ लेकर सबके जीवन में आध्यात्मिक पहलुओं की खोजकर उनका विकास करता है।

5–शुद्ध शाकाहारी जीवन शैली का संकल्प ले अहिंसा का पथ बना सबको निर्भय हो जीने का अधिकार देती है।

6–ब्रह्मचारी जीवन के आधार से समाज में बढ़ते हर करप्शन को रोकने वाला एक सशक्त मूल्यनिष्ठ कर्तव्यपरायण संगठन है।

7–सम्पूर्ण पवित्र जीवन की अलख जला समाज में स्वच्छता एवं अनुशासन को मेनटेन करने में समर्पित खुली किताब संस्था है।

8–दिशाहीन युवाओं का पथप्रर्दशक बन उन्हें हिंसा व व्यसनी जीवन से निकाल समाज में कल्याण के कन्स्ट्रक्शन में शान्तिदूत बन सेवारत हैं ।